© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 10, Issue: 01 | January - March 2023

श्रीमद्भगवद्गीतानुसार मोक्ष

जोगिन्द्र सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर

राजकीय महाविद्यालय हांसी।

*Corresponding Author

साहित्य दर्पणकार ने काव्य को चतुवर्ग की प्राप्ति का साधन बताया है अर्थात् अच्छा काव्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाला है एक दृष्टान्त में शान्त रस का ऐसा सुन्दर दृष्टान्त दिया है कि जीवन की मन्दाकिनी का पूरा आनन्द इसी योगी ने ले लिया जिसने इस भाव साम्राज्य का अनुभव किया।

हे भगवान वह कौन-सा दिन होगा जब फटी गुदड़ी का टुकड़ा लपेटे गली में घूमते हुए किसी नगरवासी से भय पूर्वक, किसी से कुतुहलवश, किसी से दया पूर्वक देखा गया मै वास्तविक आनन्द व आत्मज्ञान के अमन्द अमृतमय रस आनन्द से निद्रायमाण समाधि मग्न होऊंगा। निशंक कौआ मेरे हाथ पर रखी हुई भिक्षा को विश्वास पूर्वक खाएगा।

आत्ममुक्ति व मोक्ष की कामना का पथिक ऐसी कामना करता है। यह कौन है जो इस मार्ग का पथिक हो सकता है वेद में इसे इस प्रकार वर्णन किया गया है।

दा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्व जाते।

तयोऽन्यं पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्यन्नयो अभिचाकशीति।।[1]

सुमित्रा नन्दन पन्त जी ने इन पक्तियों का काव्यमय अनुवाद किया हैः-

दो पक्षी सहज सखा संयुक्त निरन्तर,

दोनों ही बैठे अनादि से उसी वृक्ष पर।

एक ले रहा है फल का स्वाद प्रतिक्षण,

बिना अशन दूसरा देखता अन्तलोचना ।।

संसार रूपी वृक्ष पर जीवात्मा और परमात्मा रूपी दो स्वर्णमय पंख वाले पक्षी शान्त भाव से बैठे है जीवात्मा रूपी पक्षी इस संसार रूपी वृक्ष का फल का उपभोग करता हे। परन्तु परमात्मा शान्त भाव से कुछ भी उपभोग न करता हुआ साक्षी रूप से इस विश्व को देख रहा है। जीवात्मा ही संसार के सभी सुखों और दुःखों को भोगता हुआ 84 लाख योनियों का भ्रमण करता है परन्तु जो मोक्ष का पथिक आत्मस्वरूप इस विश्व के पदार्थों का उपभोग नहीं करता वास्तव में वहीं इसी मोक्ष रूपी लक्ष्य को प्राप्त करता है तथा वही साक्षी और निर्गुण कहा गया है।

तात्पर्य यह है कि आज के भौतिकवादी इस युग में वेदान्तशास्त्र और आत्मज्ञान की बातें मात्र छलावा है। इन तथा कथित ज्ञानियों को संभवतः यह स्मरण नहीं कि वे ज्ञान का मार्ग एक साधना का मार्ग है न कि यह वाणी का विषय है। वेदों में कहा गया है- 'नायं आत्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन'। (कठोपनिषद्)

[1] मुन्डकोपनिषद् 3.1.1

'प्यमेव एष वृणुते तेन लभ्यः तस्यैषः आत्माविवृणुते तनुस्वाम्।।

यह आत्मतत्व न वाणी के द्वारा, न ही बुद्धि के द्वारा, न ही शास्त्रों के बहुत श्रवण करने से प्राप्त होता है। यह आत्म तत्त्व जिसका स्वयं वरण करता है यह उसे ही प्राप्त होता है। ऐतरेय उपनिषद् में वामदेव ऋषि का वर्णन आता है वे ऋषि गर्भ में रहते हुए अपने बहुत से जन्मों का वर्णन बताते है कि मैं लोहमय दुर्गो के समान सैकड़ों शरीरों में बन्दी रह चुका हूँ अब आत्मज्ञान हो जाने से मै श्येन (बाज) पक्षी के समान उनका भेदन कर बाहर निकल आया हूँ। ऐसा ज्ञान होने के पश्चात् वामदेव ऋषि देह पात के अनन्तर अमरपद को प्राप्त हो गए थे। सन्त कबीर ने तो स्पष्ट कह दिया हैः

ज्यों तिल माही तेल है ज्यों चकमक में आगध्तेरा सांई तुझ में है जाग सके तो जाग।

गीता में स्पष्ट कहा गया है कि ईश्वर 'सर्व भूतेषु हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। भ्राम्यन सर्वभूतानि यन्त्रा रूढानि मानवाः'।।

हे अर्जुन ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में स्थित रहता है वही सभी को यन्त्र के समान चलायमान रखता है। उस सर्वशक्तिम परमात्मा में सतत् ध्यान लगाने वाला ही इस पथ का पथिक हो सकता है। उपनिषदो में सभी आत्म मार्ग, आत्म ज्ञान, मोक्ष मार्ग की ओर अन्तर्गत संकेत करती है। परन्तु यह दैवी सम्पदा के अन्तर्गत आत्मसंयम, सर्वभूत हितेरता तथा कठोर साधना का विषय है गीता स्पष्ट रूप से

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 10, Issue: 01 | January - March 2023

निर्देश देती है कि शीतोष्ण अर्थात् गर्मी सर्दी, भूख-प्यास सुख-दुःख सभी को सहन करना पडेगा। यहां पर मध्यमार्गी लोग जो तथा कथित शब्दाडम्बर में विश्वास करते है वे महात्मा बुद्ध का उदाहरण देकर कहते है कि हमें बुद्ध के अनुसार मध्यमार्ग अपनाना चाहिए। नाना प्रकार के विचारक चिन्तक बिना अनुभव के शब्दाडम्बर द्वारा ऐसे भ्रम फैलाते है कि सामान्य जन को इस मुक्ति के मार्ग की भिन्न-2 व्याख्याएं बताकर भटका देते हैं।

गीता में स्पष्ट कहा गया है

न बुद्धि भेदम् जनयेत् अज्ञानां कर्म संज्ञिनाम्।

जोषयेत् सर्व कर्माणि विद्वान युक्त समाचरेत्।।

विद्वान व्यक्ति को चाहिए कि वह सामान्य जन की बुद्धि में भ्रम पैदा न करें। स्वयं आचरण करके उसे कर्म क्षेत्र में लगाए। क्योंकि यह सामान्य लोगों का विषय नही है। यह आत्म तत्त्व बड़ा गूढ है इसे उपनिषदों में असिधारा व्रत कहा गया है तथा अत्यन्त दुर्गम बताया गया है। गीता के पंचम अध्याय में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि- जिनका वह अज्ञान भगवान के तत्त्वज्ञान द्वारा नष्ट कर दिया गया है उनका वह ज्ञान सूर्य के सदृश उस परमात्मा को प्रकाशित करता है-[2]

[2] श्रीमद्भगवद्गीता.5.16

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 10, Issue: 01 | January - March 2023

जिनका मन तद् रुप हो रहा है उनकी वृद्धि तत् रूप हो रही है। भगवान में जिनका सतत् एकीभाव है ऐसे पुरुष जो आत्मज्ञानी है वे ही परमगति को प्राप्त होते हैं।[3]

यह साधना (तप) का मार्ग है चाहे वह ज्ञान का पथिक हो, कर्म मार्ग का पथिक हो या भक्ति मार्ग का पथिक हो गीता ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि

सततम् कीर्तयन्तों माम ये जना पर्युपासते।

तेषां नित्यभियुक्तानां योग क्षेम वहाम्यहम्।।

जो सतत् मेरा ध्यान करते है मेरी शरण की अपेक्षा करते हुए जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्रियाशील होते हैं उनके योगक्षेम अर्थात् उनके लक्ष्य की प्राप्ति में मैं सहायक होता हूँ। अप्राप्त की प्राप्ति का नाम योग है तथा प्राप्त की रक्षा का नाम क्षेम है। साधना के मार्ग पर चलते हुए भक्त या साधक की पूर्ण रक्षा का दायित्व भगवान का है। जो योग के मार्ग से मोक्ष रूपी पर्वत पर चढ़ता है वह शीघ्र ही महासुख के शिखर पर पहुँच जाता है।

यह अज्ञान जब सम्पूर्ण नष्ट हो जाता है तब भ्रम का अन्धकार मिट जाता है और ईश्वर की निष्कर्मता प्रकट होती है।

यदि चित्त में यह ज्ञान हो कि ईश्वर ही अकर्ता है और ऐसा विवेक मन में हो जाए कि स्वभावतः मै ही ईश्वर हूँ। उपनिषद् वाक्य भी यही कहते है कि- ‘‘अहम् ब्रह्मास्मि’’ ‘‘तत्त्वमसि श्वेतकेतो’’ ये सभी वाक्य ब्रह्म के एकाकार का तादात्म्य

[3] श्रीमद्भगवद्गीता.5.17

सम्बन्ध स्वीकार करते हुए सोऽहम्-साहम का उपदेश करते है। मोक्ष मार्ग के पर्थिक को सुख-दुःख, हानि लाभ विषयासक्ति, मोह, लोभ, अहंकार कभी सता नही सकते, न ही पास फटकते हैं वह तो अपने आप में ही संतुष्ट रहता हुआ स्थित प्रज्ञ हो जाता है। वह यति, मन, बुद्धि को मोक्ष के मार्ग पर लगाकर रखते है। प्राण व अपान वायु से वे हवन करते हुए मुनि इच्छाओं का इस प्राणापान की अग्नि में हवन करते रहते है, अर्थात् इच्छाएं उनके पास भी नही फटकती। यह बात अवश्य है कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कर्म का आचरण तो करना आवश्यक है सतत् क्रियाशील रहना ही इस लक्ष्य की प्राप्ति की शर्त है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गीता में वर्णन किया है कि साधक किस प्रकार इस मार्ग का पथिक बन सकता है।

जितात्मा प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।

शीतोष्ण सुखदुखेषु तथा मानापमानयोः।।[4]

साधक का शान्त स्वभाव मन्दाकिनी के शुभ्र जल के समान मन्द मन्द गति अपने प्रभु का सतत ध्यान तथा इन्द्रीयातीत लक्ष्य की प्राप्ति में सतत लगा। सन्त ज्ञानेश्वर जी ने इस विषय में बहुत ही सार गर्भित बाते कर रहे है।

आत्मतत्त्व का रहस्य वाणी का विषय नही अगर द्वैत भाव का नामोनिशान मिटा देने वाली ब्रह्मविद्या को अगर व्यक्त कर दिया जाए तो प्रेम का माधुर्य चला जाएगा। -

[4] श्रीमद्भगवद्गीता. 6.7

सन्त ज्ञानेश्वर जी तो अर्जुन रूपी सुपात्र के विषय में यह भावाभिव्यक्ति करते हैं-[5] श्री कृष्ण को यह निश्चय हुआ कि अर्जुन ऐसा विरक्त हो गया है कि उसे मोक्ष प्राप्ति रूपी फल पाने में विलम्ब नही लगेगा। वह जान गए कि वह तत्त्व ग्रहण करेगा आरम्भ करते ही तद्रूप होगा। हे अर्जुन जो मार्ग तुम्हे मैं बताता हूँ उस मार्ग में संसार रूपी वृक्ष के नीचे करोड़ों मोक्षरूपी फल बिछे हुए है। यह मार्ग देखो तो भूख प्यास भूल जाते है। रात दिन नही जान पड़ते। चलते समय जहां पांव पड़ जाए तो वही मोक्ष की खान प्रकट हुई दिखाई देती है।

तात्पर्य यह है कि भारत के ऋषियों का अथाह ज्ञान शास्त्रों में स्पष्ट निर्देश कर रहा है कि यह कर्म मार्ग है। व्यवहारिक है तथा कर्म करते-2 साधना के पथ पर चल कर ही इसका अनुभव किया जा सकता है। भगवान वेद व्यास आदि शंकराचार्य को सभी रचनाएं मोक्षमार्ग की ओर निर्देश करती है। ज्ञान के पथिक बनकर कर्म करते-2 जब मानव सात्विक वृत्तियों का अवलम्बन करेगा तथा उस ऋषि मार्ग का अनुसरण करेगा तभी इनका अनुभव हो सकता है। गुड़ का स्वाद तो उसके अस्वादन से ही पता चलेगा। ऋषियों की सन्तानों को यह नहीं भूलना चाहिए कि उनके पूर्वज एक अथाह ज्ञान सागर की धरोहर आप सभी को देकर गए है। स्वामी विवेकानन्द ने तो आप सब को अमृतपुत्र कहा है। संस्कृत का सारा साहित्य इस ओर आपको प्रेरित

[5] ज्ञानेश्वरी प्र॰ दृ (3)

कर रहा है कि इस मोक्ष रूपी मानसरोवर में आप भी स्नान करें। यह कर्म-भक्ति और ज्ञान के मार्ग से होकर अनासक्त भाव से ही प्राप्त होगा।

मोक्षस्य नही वासोऽस्ति न ग्रामान्तर मेव वा।

अज्ञान हृदय ग्रन्थी नाशो मोक्षः इति स्मृतः।।

अतः अज्ञान हृदय की ग्रन्थियों का नाश ही मोक्ष कहा है वह व्यवहार्य विषय है कर्म मार्ग है न की मात्र कहने से ज्ञान प्राप्त होगा।